पेपर कोड – 08

विषय कोड – AyUG-SA-II

बी०ए०एम०एस० द्वितीय व्यावसायिक परीक्षा–2025

संहिता अध्ययन

समय : 3 घंटे | अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) प्रत्येक 1 अंक

1. चरकानुसार साग्नि स्वेद नही है–
   (A) उपनाह स्वेद (B) पिण्ड स्वेद (C) कर्षू स्वेद (D) इनमें से कोई नही
2. निम्न में क्षय का हेतु है–
   (A) भूतोपघात (B) अचिन्तन (C) दिवास्वप्न (D) मलबन्ध
3. तिमिर है–
   (A) कफ नानात्मज विकार (B) पित्त नानात्मज विकार
   (C) आगन्तुज विकार (D) वात नानात्मज विकार
4. स्थूल पुरूष का चिकित्सा सूत्र है–
   (A) गुरू + तर्पण (B) लघु + अतर्पण (C) गुरू + अतर्पण (D) लघु + तर्पण
5. संतर्पणजन्य व्याधि की चिकित्सा में प्रशस्त है–
   (A) व्योषादि सत्तू (B) तर्पण (C) स्नेह बस्ति (D) तीनों में से कोई नहीं
6. **'समांश्चैव शरीरधातून प्रकृतौ स्थापयति विषमांश्च समीकरोति'** किसका लक्षण है–
   (A) हिताहार (B) पथ्य (C) प्रशस्त पुरूष (D) धातुसाम्य
7. प्राणाभिसर भिषक होता है–
   (A) रोगों का नाशक एवं प्राणों का रक्षक (B) रोगों का रक्षक एवं प्राणों का नाशक
   (C) रोगों का नाशक (D) प्राणों का रक्षक
8. दोषों की अंशांश कल्पना करना किस सम्प्राप्ति के अन्तर्गत आता है–
   (A) विधि सम्प्राप्ति (B) प्राधान्य सम्प्राप्ति (C) विकल्प सम्प्राप्ति (D) बल सम्प्राप्ति
9. किस प्रमेह में मधुर मूत्र त्याग होता है–
   (A) इक्षुबालिका रसमेह (B) शीतमेह (C) मधुमेह (D) तीनों में
10. सिध्म कुष्ठ में प्रधानता होती है–
    (A) त्रिदोष की (B) पित्त–कफ की (C) कफ की (D) वात–कफ की
11. आतुर में चिरकाल तक क्लेशोत्पादक होते हैं–
    (A) उर्ध्वगामी दोष (B) विबद्ध दोष
    (C) उर्ध्व–अधोगामी दोष (D) तिर्यग्गामी दोष
12. आम की उत्पत्ति में कारण है–
    (A) दुःख शय्या (B) शोक (C) अतिमात्राशन (D) सभी
13. अतिव्यवाय किस स्रोतस दुष्टि का हेतु है–
    (A) शुक्रवह स्रोतस (B) मूत्रवह स्रोतस
    (C) शुक्र–मूत्रवह स्रोतस (D) शुक्र–पुरीषवह स्रोतस

14. **'स्वतन्त्रो व्यक्त लिंगो यथोक्तसमुत्थानप्रशमनो'** किसका लक्षण है–

(A) अनुबन्ध्य का (B) अनुबन्ध का (C) निजरोग का (D) आगन्तुज रोग का

15. धातुसाम्य है–

(A) कार्य (B) कार्ययोनि (C) कार्यफल (D) करण

16. स्त्री एवं पुरूष दोनों के लक्षणों से युक्त सन्तान कहलाती है–

(A) षण्ड (B) दोहद (C) द्विरेता (D) द्विपुष्पा

17. पुरूष में 'लोकगत अश्विनौ' का समतुल्य भाव है–

(A) कान्ति (B) उत्साह (C) सुख (D) इन्द्रिय

18. गर्भोपघातकर भाव है–

(A) उत्कटासन (B) आघात (C) वेगविधारण (D) सभी

19. ज्ञातकारण जन्य अरिष्ट विकृति होती है–

(A) लक्षण निमित्ता (B) लक्ष्यनिमित्ता (C) मिमित्तानुरूपा (D) प्रत्यात्मनियता

20. अकारण भक्ति, शील, स्मृति, बुद्धि एवं बल का परिवर्तित होना कितने मास में मृत्यु का सूचक अरिष्ट है–

(A) 01 मास (B) 06 मास (C) 12 मास (D) 03 मास

लघुउत्तरीय प्रश्न (SAQ) प्रत्येक 5 अंक

21. संसर्जनक्रम
22. अतिस्थूल एवं अतिकृश चिकित्सा सूत्र
23. रक्तपित्त साध्यासाध्यता
24. अष्टविध आहार विधि विशेषायतन
25. दशविध आतुर परीक्षा
26. असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग
27. पुंसवन कर्म
28. इन्द्रिय स्थानोक्त विकृति

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ) प्रत्येक 10 अंक

29. षडुपक्रम का विस्तृत वर्णन करें।
30. "इह खलु निदानदोषदूष्यविशेषेभ्यो विकारविघातभावाभावप्रतिविशेषा भवन्ति" की ससंदर्भ व्याख्या करते हुये शोष के चतुर्विध आयतनो द्वारा शोष की सम्प्राप्ति को स्पष्ट करें।
31. स्वभावोपरमवाद को स्पष्ट करते हुये चिकित्सा की परिभाषा, चिकित्सक के कर्म एवं चिकित्सा की आवश्यकता पर प्रकाश डालिये।
32. मात्रावत आहार एवं अमात्रावत आहार के लक्षणों को स्पष्ट करते हुये आमदोष के हेतु, भेद एवं चिकित्सा का विस्तृत वर्णन करें।

••••